B.A. Part 2

Paper Fifth

सार्वजनिक बजट का अर्थ :-

(Public Budget)

सार्वजनिक /लोक बजट को अर्थपूर्ण ढ़ंग से परिभाषित करने हेतु इसके निम्न-सहित मुख्य आयामों की जानकारी हितकर समझी जाती है -

(1) सार्वजनिक बजट सरकार द्वारा वित्तीय साधन जुटाने तथा व्यय करने का एक विस्तृत और मद-वार ब्यौरा होता है। किसी समय बजट को इसी संकुचित अर्थ में परिभाषित किया जाता है था। यह ब्यौरा एक पूर्वनिश्चित कालावधि (सामान्यतः 1 वर्ष) के लिए होता है। बजट के लागू होने की तिथि से पर्याप्त समय पूर्व ही इसे संसद अथवा अन्य ~~संबंध~~ संबद्ध वैधानिक प्राधिकरण के समक्ष पारित करने हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है। इस प्रकार कानूनी प्रतिबंधनों के अंतर्गत सरकार वित्तीय प्राप्तियों की वसूली और उनके संवितरण की पूर्वानुमति प्राप्त करती है।

(2) एक आधुनिक सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी प्राप्तियों एवं व्यय संबंधी निर्णय व्यवस्थित ढ़ंग से और कानून के अनुसार लेगी। मूलतः सरकार द्वारा एकत्रित संसाधन समाज की धरोहर होते हैं और इसका यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि इनका किसी प्रकार से अपव्यय न होने दे। इसके अतिरिक्त बजट की सभी मदों का परस्पर गहरा संबंध होने के कारण इनका रूप-आकार सरकार की नीति-समूह के अनुरूप होना चाहिए। अतः वैधानिक प्राधिकरण को उपयुक्त जानकारी देने और अपने नीति-समूह से अवगत कराने हेतु बजट में वित्तीय आंकड़ों के कई सैट रहते हैं। उदाहरणार्थ भारत में इन आंकड़ों के चार सैट रहते हैं, अर्थात -

(i) गत वर्ष के वास्तविक आंकड़े (actuals for the previous year)

(ii) चालू (अर्थात समाप्त होते) वर्ष के लिए पारित किए गए आँकड़े, अर्थात 'बजट अनुमान' (budget estimates for the current / outgoing year)

(iii) चालू वर्ष के अनुमानित वास्तविक आंकड़े, अर्थात 'संशोधित अनुमान' (revised estimates for the current/outgoing year)

(iv) आने वाले वर्ष (अर्थात विचाराधीन बजटीय कालावधि) के लिए प्रस्तावित

Scanned by CamScanner

अनुमान अर्थात् 'बजट अनुमान' (budget estimates for the incoming year)

इस चौथे भाग में भी मद-वार प्रस्तावित व्यय राशियों के आँकड़ों का सैट तथा प्राप्तियों के अनुमानों के दो सैट होते हैं। प्राप्तियों के पहले सैट में वर्तमान (existing) कर-ढाँचे को यथास्थित रखते हुए अनुमानित प्राप्तियों राशियाँ ('estimates without budgetary proposals') दर्शाई जाती हैं; तथा दूसरे सैट में 'बजट-प्रस्तावों' (अर्थात् कर-ढाँचे एवं अन्य नीतियों आदि में प्रस्तावित संशोधनों) के परिणामस्वरूप अपेक्षित अनुमान (estimates with 'budgetary proposals') दर्शाए जाते हैं।

(3) इस प्रकार लोक बजट के माध्यम से सरकार देश, समाज तथा अर्थव्यवस्था के समक्ष समस्याओं, तथ्यों, लक्ष्यों तथा उनकी प्राप्ति की संभावनाओं से संबद्ध अपना मूल्यांकन और नीति-समूह प्रतिबिम्बित करती है।

(4) बहुधा चालू वर्ष के 'बजट अनुमानों' (budget estimates, B.E.) तथा 'संशोधित अनुमानों' (revised estimates, R.E.) में अंतर रहता है। बजट में यथासंभव इसके कारणों पर प्रकाश डाला जाता है।

(5) सामान्यतः सार्वजनिक बजट की कुछ व्यय मदों के लिए सरकार कानूनीतौर पर बाध्य होती है तथा उनके लिए साधन जुटाने के पश्चात् ही शेष व्यय मदों पर ध्यान दे सकती है। कुछ निर्दिष्ट साधन-प्राप्तियाँ कुछ निर्दिष्ट व्यय मदों के लिए ~~पूर्वनिर्धारित~~ पूर्वरक्षित (earmarked) भी हो सकती हैं।

(6) यह भी संभव है कि बजट को दो अथवा दो से अधिक भागों में वैधानिक प्राधिकरण को प्रस्तुत किया जाए। ऐसा कई कारणों से हो सकता है —

(i) देश में बहुस्तरीय सरकारें होने पर यह आशा की जाती है कि केन्द्रीय सरकार के अतिरिक्त राज्य सरकारों तथा स्थानीय सरकारों के बजट अलग से उनके वैधानिक प्राधिकरणों को पारित करने हेतु प्रस्तुत किए जाएँगे।

(ii) सरकार के किसी एक स्तर पर भी बजट को खंडों में प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरणार्थ भारत में केन्द्रीय सरकार बजट में से 'रेलवे बजट' का खंड 'सामान्य बजट' (अर्थात् 'मुख्य बजट') (General or Main

Scanned by CamScanner

Budget) से पूर्व तथा अलग से संसद के समक्ष रखा जाता है।

(iii) कभी-कभार, चुनाव अथवा किसी अन्य कारण से भी सार्वजनिक बजट सामान्य कालावधि (अर्थात एक वर्ष) से कम कालावधि के लिए वैधानिक प्राधिकरण के समक्ष आता है तथा वर्ष के शेष भाग के लिए बजट का शेष खंड ~~खंड~~ बाद में पारित करने की बारी आती है।

(iv) इसी प्रकार वर्ष के दौरान (अर्थात बजट की कालावधि के अंतर्गत) सरकार को किन्हीं कारणों से अतिरिक्त साधनों की अथवा अतिरिक्त व्यय करने की आवश्यकता पड़ सकती है जिसकी पूर्ति हेतु वह एक पूरक बजट (Supplementary Budget) तैयार करती तथा पारित कराती है। पूरक बजट की आवश्यकता के कई कारण हो सकते हैं; जैसे कि सरकार के अपनी कार्यकलापों और नीति में संशोधन, प्राकृतिक प्रकोप, तथा अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन आदि।

(7) बजट का मदों तथा मद-वर्गों में बँटवारा देश के कानूनी ढाँचे तथा लेखांकन ~~पद्ध~~ पद्धति (accounting system) पर निर्भर करता है। इस अनिवार्य वर्गीकरण के साथ-साथ बजट को अर्थपूर्ण बनाने तथा उसके प्रभावों का सही अनुमान लगाने के लिए बजटीय मदों को केवल प्राप्तियों और संवितरणों के अतिरिक्त अन्य आधारों पर भी वर्गीकृत किया जाता है, जिनकी व्याख्या इस अध्याय में बाद में की गई है। ध्यानयोग्य है कि बजट के ~~राजस्व~~ राजस्व और पूंजी खातों (revenue and capital accounts) में वर्गीकरण की प्रथा बहुत पुरानी है; तथा इसके अतिरिक्त नित नए प्रकार के वर्गीकरणों को अपनाया जा रहा है।

(8) प्रत्येक सरकार के समक्ष एक ~~उ~~ उद्देश्य-समूह रहता है जिसके तदनुरूप वह अपनी नीतियों और कार्यकलापों का चुनाव करने का प्रयास करती है। इस संदर्भ में बजट एक दोहरी भूमिका निभाता है। बजटीय नीतियाँ सरकार के समग्र ~~की~~ नीति-समूह का एक प्रभावी और अभिन्न अंग होती हैं; तथा इनसे इसकी सभी नीतियों और कार्यकलापों का वित्त-पोषण भी होता है।

Scanned by CamScanner